चतुर्थ अध्याय

'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ

प्रस्तावना :

मानव समूह द्वारा समाज की निर्मिति होती है। मानव का मूलस्रोत नारी है। नारी से ही मानव सृष्टि प्रसूत होती है। इतिहास प्रमाण है कि नारी ही परिवार को बनाती है और बिगाड़ती भी है। सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक रूप में नारी ही सर्वप्रथम सम्मुख उपस्थित होती है जिसके बलबूते पर सभ्यता और संस्कृति का महल शान से खड़ा है। नारी उदारता, सेवा, सहृदयता, स्नेह, ममता, आदि गुणों से युक्त होकर पुरूष के जीवन में प्रवेश कर उसकी प्रेरणादात्री, शक्तिदात्री बन जाती है। आदर्श परिवार के निर्माण में नारी अपने समस्त जीवन को समर्पित करती है, भले ही वह चाहे अनपढ़ हो या शिक्षित हो। उसके लिए अपना परिवार ही सर्वस्व होता है, जिसके प्रति सर्वस्व को तिलांजलि दे देती है।

नारी विहीन समाज की कल्पना संभव प्रतीत नहीं होती। पुरूष ही शिव है, तो स्त्री या नारी ही वह शक्ति है ; जिसके अभाव में शिव भी शव समान है। मूलत: पुरूषत्व का आधार ही नारी है। नर और नारी का परस्पर संबंध पूरक रहा है। पुरूष को समस्त प्रकार की सहायता नारी जीवन के अंत तक करती रहती है। दुनिया में इसी कारणवश नारी की गुरूता बनी रहेगी।

पुरूष को दुनिया का एक पहिया मानना उचित है, तो दूसरा पहिया नारी है। नारी जरूर दुनिया का दूसरा पहिया है ; किंतु वह साइकिल का दूसरा पहिया नहीं है, जो पहिले पहिये का अनुगामी होता है वरन् नारी दुनियारूपी रथ का वह पहिया है, जो पहिले पहिये के सदृश्य कंधे-से कंधा मिलाकर चलता है, तथा वहन करता है। वह रथ का अनिवार्य अंग है, जिसके अतिरिक्त रथ का सुचारू संचलन असंभव है।

न्याय, क्रोध, शुष्क कर्तव्यता से युक्त पुरूष को दया, क्षमा, संयम, सरसता, सहानुभूति, शांति, वात्सल्य से नारी प्रभावित कर 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की ओर अग्रेसर करती

है। नारी ही जीवन में पुरूष को आनंद प्रदान करती है तथा मृत्युपश्चात् मोक्ष तक पहुँचाने का कार्य करती है। नारी अपने जीवन में वंश वृद्धि का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाति है और प्रकृति के प्रति उऋण होने का प्रयास करती है। मातृत्व प्राप्त करना ही नारी के लिए अभिनंदनीय सर्वोच्च पद प्राप्त करना है।

विविध कारणों से नारी का मानव-जीवन में अनन्यसाधारण महत्वपूर्ण स्थान रहा है, है और अक्षुण्य रहेगा।

4.1 नारी की संकल्पना :

4.1.1 नारी से तात्पर्य :

'नारी' इस शद्ध की उत्पत्ति 'नृ + अञ् + ङीन्' से हुई है। 'नारी' शद्ध का अर्थ द्रष्टव्य है -

1. मानक हिंदी कोश : "1. संस्कृत 'नर' का स्त्रीलिंग रूप। मनुष्य जाति का लिंग के विचार से वह वर्ग जो गर्भधारण करके प्राणियों को जन्म देता है। 2. विशेषत: वह स्त्री जिसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा आदि गुणों की प्रधानता हो। 3. युवती तथा वयस्क स्त्रियों की सामूहीक संज्ञा। 4.धार्मिक क्षेत्र में तथा साधकों की परिभाषा में (क) प्रकृति और (ख) माया।"[1]

2. हिंदी शब्द सागर : "स्त्री। औरत।"[2]

उपर्युक्त 'नारी' शद्ध के विभिन्न अर्थों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात हो जाता है कि - वह स्त्री नारी है, जो मनुष्य प्राणी को जन्म देती है और जिसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा आदि गुणों की प्रधानता होती हैं।

4.1.2 नारी की परिभाषा :

विविध विद्वानों अथवा मनीषियों द्वारा नारी संबंधी विचारों की अभिव्यक्ति अपने साहित्य में मिली हैं। इन विचारों पर दृष्टिपात करने से नारी की छवी सम्मुख उपस्थित होती हैं। मनीषियों के विचारों को यहाँ परिभाषा के रूप में उद्धृत करना आवश्यक जान पडता है। अत: 'नारी' की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से हैं -

1. डॉ० वल्लभदास तिवारी :

डॉ० वल्लभदास तिवारी के मतानुसार - "नारी ने ही हमारी वैदिक सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्य के निर्माण में महत्वपूर्ण योग दिया है। नारी ही आदिम संस्कृति का उद्‌गम स्थल है और नारी ही सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका और गार्हस्थ स्नेहसुख की सरिता है।"[3] अत: डॉ० तिवारी के अनुसार आदिम संस्कृति का उद्‌गम स्थल एंव सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका तथा गार्हस्थ स्नेहसुख प्रदायिनी नारी है। अन्य स्थान पर उन्होंने लिखा है कि - "नारी प्राणदायी है। नारी की प्रेरणा पुरूष को महान कलाकार, महान कवि और महान उद्योगी बना सकती है। वह समाज में सरसता का संचार कर सर्जन कार्य को सुचारू रूप से संचलित करती है।"[4]

2. मुन्शी प्रेमचंद :

मुन्शी प्रेमचंद के नारी संबंधी विचार उन्हीं के शद्धों में - "पुरूष विकास के क्रम में नारी से पीछे है। जिस दिन वह भी पूर्ण विकास तह पहुँचेगा वह स्त्री हो जायेगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण है।"[5] वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया, क्षमा आदि नारी के गुण हैं, जिनके विकास क्रम में पुरूष नारी से पीछे है।

3. डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन :

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति तथा विश्वविख्यात दार्शनिक भारतरत्न डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन लिखते है कि - "एक पशु जिसका प्रशिक्षण नारी करती है। नारी मूलत: पुरूष की शिक्षिका है तव भी जव वह वच्चा होता है और तव भी जव वह वयस्क होता है।"[6] अत: नारी पुरूष की आजीवन प्रशिक्षिका है।

4. डॉ० गोवर्धन सिंह :

डॉ० गोवर्धन सिंह का मानना है कि - "नारी वह होती है, जो सव तरह की सुविधाएँ पाकर भी मन-प्राण से जीवनभर एक ही पति की आराधना करती रहती है।"[7] अत: नारी एक पतिव्रता होती है।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

5. डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी :

नारी की परिभाषा के रूप में डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन द्रष्टव्य है कि - "जहाँ कहीं अपने आपको उत्सर्ग करने की अपने आपको खो देने की भावना जहाँ विद्यमान है, वह नारी है।"[8]

6. स्वामी विवेकानंद :

स्वामी विवेकानंद मानते है कि - "भारत में नारी ईश्वर की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है और उसका संपूर्ण जीवन इस विचार से ओतप्रोत है कि वह माँ है और पूर्ण माँ बनने के लिए उसे पतिव्रता रहना आवश्यक है।"[9]

7. महादेवी वर्मा :

हिंदी साहित्य जगत् में स्त्री विमर्श अथवा नारी विमर्श, नारीवाद, नारीचेतना से संबंधित लेखन करनेवाली सर्वप्रथम महिला लेखिका महादेवी वर्मा नारी को क्षमादात्री मानती है। उन्हीं के शब्दों में "पुरूष प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री क्षमा, पुरूष शुष्क कर्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरूष बल है, स्त्री हृदय की प्रेरणा है।"[10]

8. डॉ॰ श्यामबाला गोयल :

डॉ॰ गोयल नारी के संदर्भ में लिखती है - "नारी गृह, कुटुंब, एवं परिवार की केंद्रबिंदु है। वह समाज के अन्य नारी पात्रों में प्रमुख है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति के अनुसार पत्नी के अभाव में पुरूष अपूर्ण है, पत्नी ही पुरूष के अर्धांग की पूर्ति करती है। पत्नी में विनम्रता, सुशीलता एवं मधुरता होती है। वह केवलमात्र जीवन के विलासक्षणों की प्रतीक न होकर सुख-दुख की समभागिनी, सचिव के समान सत्परामर्शदात्री तथा धार्मिक कृत्यों में सहयोगिनी होती है। वह अपनी मधुर एवं सरस वाणी से सदअसद का ज्ञान करानेवाली, कठिन कार्य की प्रेरिका स्वरूप होती है। पत्नी पति को कर्तव्य-पथपर अग्रसर करनेवाली, सेवाकाल की दासी, वन उपवन की सहचरी, जीवन काल की चिरसंगिनी होती है।"[11]

9. महात्मा गांधी :

महात्मा गांधीजी स्त्री - पुरूष समानता स्वीकृत करते हुए लिखते है, कि -

"My own opinion is that just as fundamentally man and women are one. Their problem must be one in essence the soul in both is the same. The two live Same life have the same feelings each is complement of their. The one can not live without the others active help."[12] अर्थात् मेरा (गांधीजी) मत है कि, सैद्धांतिक रूप से नर-नारी दोनों एक हैं, दोनों के जीवन की समस्याएँ समान हैं, दोनों में समान आत्मा निवास करती है। दोनों में समान अनुभूतियाँ होती हैं, दोनों एक-दूसरे को संपूर्ण बनाते हैं। एक की सहायता के अभाव में दूसरा जिवित नहीं रह सकता। अत: महात्मा गांधीजी स्त्री-पुरूष को परस्पर पूरक मानते है।

इस विवेचन के पश्चात् समन्वित रूप में नारी की परिभाषा सामने आ जाती है कि - नारी मानव सृष्टि की उत्पादिका, प्रतिपालिका, गार्हस्थ स्नेहसुखदात्री हैं। वह वात्सल्य, स्नेह, दया, कोमलता आदि गुणों से युक्त होने के साथ-साथ पुरूष की प्रशिक्षिका भी हैं। वह परिवार के लिए स्वयं के अस्तित्व तक को खो बैठनेवाली प्रतिव्रता है। नारी पुरूष की सहचारिणी तथा प्रेरणादायिनी है। नारी पुरूष के समान एवं पूरक हैं।

4.1.3 नारी के विभिन्न रूप :

समाज-जीवन में नारी विविध भूमिकाओं को अदा करती हैं। हर एक के जीवन में नारी का असाधारण महत्व होता है। फलस्वरूप वह नारी विविध रूपों में व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित होती हैं। नारी के विभिन्न रूप होते हैं, जिसमें से प्रमुख रूप निम्नांकित हैं -

1. माता :

नारी का अत्यधिक गुरूता दर्शक रूप है - माँ या माता। नारी का सर्वोच्च पद माता ही है। मातृत्व प्राप्त करना नारी का सौभाग्य माना जाता है, जिसके द्वारा नारी सृष्टि में मानव-जगत् निर्माण का कार्य निरंतर बनाए रखती है। वेद माता को पृथ्वी स्वरूप मानते हैं। महादेवी वर्मा लिखती है कि - "पृथ्वी के समान ही वह संतान धारण करती है, उसका पालन-शोषण करती है और आजीवन उसके सुख की कामना करती है। स्त्री के विकास की चरम सीमा उसके मातृत्व में ही चरितार्थ होती है।"[13] नारी का माता रूप सदैव अभिनंदनीय है। क्योंकि "माता के वात्सल्य, करूणा, ममता और स्नेह का कोष कुपुत्र और सुपुत्र के लिए

स्वभाव से हो समान रहता है। एकांत मनोयोग एवं एकनिष्ठ साधना से पुत्र के जीवन को आदर्शमय वनानेवाली राष्ट्र और सभ्यता की जन्मदात्री नारी का माता रूप सदा ही अभिनंदनीय रहा है।"[14]

छत्रपति शिवाजी महाराजा, म० गांधी, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंग, जैसे सुपुत्रों को जन्म देनेवाली माताएँ सदैव, चिरकाल तक राष्ट्र के लिए महाभूषण सिद्ध होंगी।

2. बहन :

अविवाहित अथवा विवाहित स्त्री-पुरूषों का समाज में सबसे पवित्र रिश्ता अगर कोई माना जाता है तो वह है - भाई-बहन का रिश्ता। बहन के संदर्भ में डॉ० जे० एम० देसाई जी लिखती है कि - "सभ्यता के प्रभातकाल में बहन का संबंध नगण्य था। पर सभ्यता के विकास के साथ यह मान्य हो गया है। भारतीय समाज में स्त्री-पुरूष के सहज संबंध का प्रतीक 'बहन' शद्ध बन गया है। बचपन की साथी बहन का स्थान महत्वपूर्ण है। बहन छोटी हो तो भाई से प्यार पाती है, बड़ी हो तो प्यार और आदर दोनों पाती है। पुरूष के हृदय के वासनामुक्त सात्विक प्रेम पर बहन का अधिकार होता है। भाई-बहन के निश्छल प्रेम से मनुष्य कभी अध: पतित नहीं होता। आधुनिक काल में बहन भाई को सिर्फ अपनी ही नहीं, देश की रक्षा हेतु भी राखी भेजती है।"[15] इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि वे एक ही वंश, कुल, जाति, धर्म से संबंधित हो, बल्कि इनसे परे होते हुए भाई-बहन के रिश्तें बनानेवालों के नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरो में अंकित हैं।

3. पत्नी :

परिवार कि स्थिति-सुखद हो या चाहे दुखद-का वोध 'पति-पत्नी' के संवंधों से ज्ञात हो जाता है। इस रूप में नारी पुरूष की सहजीवनयात्री होती है। पत्नी पर ही घर-परिवार की शोभा निर्भर होती है, उसी द्वारा परिवार का कल्याण एवं पोषण होता है। इस संदर्भ में कथन द्रष्टव्य है कि - "पत्नी का परिवार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है, वह गृहिणी रूप में जहाँ घर रूपी राज्य की स्वामिनी है, वहीं प्रेमिका, अर्धांगिनी तथा सती आदि रूपों में पति की प्रेरणादायी शक्ति रही है।"[16] नारी का पतिव्रता पत्नी होना परम-धर्म है।

भक्तिकालीन कवियों ने नारी की भले ही निंदा की हो, किंतु उन्होंने नारी के पतिव्रता रूप की सदैव प्रशंसा की है।

4. प्रेमिका :

मानव-जीवन में प्रेम का एक मधुकण घुल-मिल जाता है, तो वह जीवन में पर्याप्त परिवर्तन लाने में संभवत: सफल हो सकता है। प्रेम के संदर्भ में इस कथन पर दृष्टिपात करना जरूरी जान पड़ता है - "प्रेम जीवन का अमृत है। यदि कहीं पूर्णता है, तो प्रेम में ही है। प्रेम जीवन का अभिन्न अंग है। इसकी व्यापकता सभी जगह है। इसमें वासना की गंध नहीं होती, अत: यह एकनिष्ठ प्रेम सच्चा और पवित्र होता है। प्रेम किया नहीं जाता, हो जाता है 'जब कोई प्रेम तोड़ने का उद्यत होता है - जानिये वह प्रकृति से लोहा लेने के लिए तैयार है।"[17] सोनी-महिवाल, हीर-रांझा, मुमताज-शहाजहाँ आदि प्रेमी युग्मों ने विश्व में अजरामर ख्याति अर्जित की। प्रेमिकाओं से प्रेरणा, शक्ति ग्रहण कर युद्ध जितनेवाले महापुरूषों की संख्या भारत में अनगिनत हैं।

5. सपली या सौत :

नारी का नारी के लिए असहनीय रूप है - 'सौत'। यह रूप नारी के लिए दु:खदायी रूप है। इस संदर्भ में डॉ० गोयल लिखती है - "नारी का सपली रूप सापत्न्य भाव को लक्षित करता है। सपली अथवा समाज प्रचलित 'सौत' शद्ध कटुता, विद्वेष और ईर्ष्या का पर्यायवाची ही है। यह नारी के वैवाहिक जीवन की जटिल समस्या का कारण होता है जो पुरूष के बहुविवाह की कामना अथवा अत्याधिक कामुकप्रवृत्ति तथा अनेकानेक स्वार्थ भावनाओं के परिणामस्वरूप होता हैं।"[18]

6. सास एवं बहू :

हर वहू एक ना एक दिन सास वनती है। जव विवाहोपरांत एक लड़की अपने पति के घर में प्रवेश करती है, तव वह वहाँ की वहू वन कर विविध उत्तरदायित्वों को निभाती हैं। तभी उसका सामना सास ले होता है, जो कि एक नारी ही होती है। सास अपनी वहू को कर्तव्यों का परिचय कराती हैं, जिसे वह निभाती है तथा अपनी वहू को निभाने के लिए

कटिबद्ध करती है। अक्सर सास और बहू का रिश्ता कलहयुक्त हो, इसकी आवश्यकता नहीं है। वल्कि सास अपनी वहू को वेटी-सा स्नेह करती देखा जाता है।

7. बेटी :

नारी का बेटी रूप एक महत्वपूर्ण रूप है। क्योंकि बेटी एक घर में पैदा होती है, तो विवाह-पश्चात् दूसरे घर में जाती है, जिससे दो परिवारों को मिलाने का कार्य वह करती है। बेटी दो परिवारों को अपने कार्य द्वारा दैदिप्यमान कर उज्ज्वल बनाती है।

उपर्युक्त नारी के प्रमुख रूपों के अतिरिक्त समाज में नारी के विविध रूप दिखाई पड़ते है, जिनमें से कुछ नारी रूपों का नामोल्लेख इस प्रकार हैं - बलात्कारिता, वेश्या, संन्यासिनी, समाजसेविका, अध्यापिका, अबला आदि।

नारी के विभिन्न रूपों पर दृष्टिपात करते हुए डॉ० श्यामबाला गोयल लिखती हैं कि - "समाज में नारी के माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी, सपत्नी, सेविका, परिचारिका, तपस्विनी आदि अनेक रूप हैं। धार्मिक दृष्टि से रमा, जगदंबा, लक्ष्मी, सरस्वती, श्री आदि रूपों में श्रद्धा एवं पूज्य भाव से युक्त होती। राजनीतिक दृष्टि से नारी योद्धा, कुटनी - तिज्ञा, शासिका तथा दासी आदि रूपों में दिखाई देती है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से स्वकिया, परकिया, वासकसज्जा, प्रेषित-प्रतिका आदि अनेक रूप दिखाई देते हैं।"[19]

इस प्रकार नारी के समाज में विविध रूप देखने को मिलते है। इन सभी रूपों विद्यमान नारी अनेक प्रकार से पुरूष के साथ जुड़कर सृष्टि के सुचारू संचालन में अपना अनमोल सहयोग देती हैं।

4.1.4 नारी की युगपत् स्थिति :

समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। महादेवी वर्मा जी लिखती है कि - "---- समाज-वृक्ष के सघनमूल का पहला अकुंर स्त्री, पुरूष और उसकी संतान में पनपा, इसे निर्मूल सिद्ध कर देना संभव नहीं हो सकेगा।"[20] अत: समाज के आरंभ से लेकर वर्तमान समय तक नारी का अस्तित्व विभिन्न रूपों में रहा है, जिसे ठुकराया नहीं जा सकता। स्त्री-पुरूष के मिले-जुले रूपों से ही समाज-जीवन की गतिशीलता विकसित और उत्तरोत्तर

बढ़ती हुई जा रही है। इस सृष्टि के आरंभ से लेकर आज तक नारी एवं पुरूष की श्रेष्ठता सम-समान हैं। फिर भी समाज में एक को महत्व और दूसरे को ही हीनत्व दिया गया। इस समाज में एक की सक्रियता और दूसरे की उपेक्षा समानांतर चलती रही हैं। इस स्थिति के कारण उस दूसरे की माने नारी की जीवनधारा अवरूद्ध भले ही न हुई हो, कुंठित आवश्य बन गई। इस नारी-जीवन की युगानुरूप परिवर्तित स्थिति को जानना आवश्यक जान पड़ता है। अत: नारी पर युगानुरूप दृष्टिक्षेप निम्न प्रकार है -

1. प्रागैतिहासिक कालखंड या युग :

प्रागैतिहासिक काल में घटित घटनाओं के पुख्त प्रमाण नहीं मिलते, किंतु पुरातत्व अन्वेषकों ने प्राप्त प्रमाणों के आधार पर अनुमान दिये हैं। उससे ज्ञात होता है कि - प्रागैतिहासिक काल में नारी-पुरूष छोटे-छोटे समूहों में रह कर जीवन-यापन करते रहे। तब विवाह जैसी कोई पद्धति अस्तित्व में नहीं थी। मनुष्य अर्धविकसित पशु के समान यौन संबंध रखता था। तत्कालीन परिवार मातृसत्तात्मक होने के कारण नारी को पुरूष से भी श्रेष्ठ स्थान प्राप्त था। नारी को समाज में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि अधिकार प्राप्त थे। तत्कालीन समय की मूर्तियों को देखने से पता चलता है कि तत्कालीन नारी देवत्व पद पर भी विराजमान थी। आशारानी व्होरा के मतानुसार - "तत्कालीन संस्कृति के निर्माण में उनका प्रमुख हाथ रहा होगा, ऐसा कला-शिल्प के प्राप्त नमूनों और घरों के उन्नत व सुसंस्कृत स्तर के अवशेषों से पता चलता है।"[21]

अत: प्रागैतिहासिक काल की नारी सम्मान, श्रद्धा, उच्च स्थान, सत्ता आदि की आधिकारिणी थी।

2 वैदिक कालखंड या युग :

वैदिक काल में नारी की स्थिति उन्नत थी, इसके प्रमाण मिलते हैं। इस काल की नारी को पुरूष के समकक्ष मानकर उसे समान अधिकार प्रदान किये गये थे। इसकी पुष्टि अर्धनारीश्वर की संकल्पना करती है। नारी गुरू के आश्रम में निवास कर गुरू-पत्नी के संरक्षण में उच्च-शिक्षा प्राप्त करती थी। वैदिक काल के सब से प्राचीन ग्रंथ- 'ऋग्वेद' के 10 वे मंड़ल

के 39 वें और 40 वें सूक्तों की रचना एक नारी - 'घोषा' ने की है, जिसे ब्रह्मवादिनी भी कहा जाता है। इंद्राणी, लोपामुद्रा, विश्वंभरा, अपाला आदि नारियों ने ऋग्वेद की ऋचाओं की सृष्टिकर ख्याति अर्जित की।

वैदिक नारी के संदर्भ में डॉ० किरण बाला आरोड़ा लिखती है - "धर्म शास्त्रों में नारी का गौरव गान भी है और उसके प्रति कटूक्तियाँ भी। स्त्री की अनुकूलता ही स्वर्ग और उसका प्रतिकूल होना नरक से भी भयंकर है। स्त्री ही संपूर्ण रोगों की औषधी है। नारी के सम्मान वेहीन, कुल विहीन, प्रतिव्रता, विधवा तथा रोगिनी होने पर स्मृतिकारों ने उसकी रक्षा का भार सब को सौंपा हैं।"[22] वैदिक काल की नारी को जीवन-साथी के चयन की स्वतंत्रता थी। इसी से स्वयंवर की संकल्पना आगे आयी। कार्य, निर्णय, विधवा-विवाह, शिक्षा, समान अधिकार आदि की स्वतंत्रता थी। उस काल में बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा प्रचलन में नहीं थी। अविवाहित लड़की - पुत्रिका का पैतृक-संपत्ति पर पुत्र के समान अधिकार था। वैदिक कात नारी के प्रति समाज में उच्च, उदात्त एवं विशाल दृष्टिकोण था। इस संदर्भ में कथन द्रष्टव्य है - "इसमें कोई संदेह नहीं कि वैदिक आर्यों के बीच नारी की स्थिति इतनी ऊँची थी कि आज बिसवी शती में संसार का अधिक-से-अधिक सुसंस्कृत राष्ट्र भी नहीं कह सकता कि उसने नारी को उतना ऊँचा स्थान प्रदान किया है।"[23]

अत: वैदिक काल की नारी मानवी पद पर आसीन थी तथा उसे पुरूष के समकक्ष अधिकार प्रदान होने के कारण स्व-व्यक्तित्व विकास के लिए बराबर अवसर था।

3. उत्तर - वैदिक कालखंड़ या युग :

उत्तर-वैदिक काल में शनै: शनै: पुरूष का महत्व वढ़ा और नारी की स्वतंत्रता एवं अधिकार सीमित होने लगे। राज्य-विजयरत पुरूषों के कारण घर की जिम्मेदारियाँ नारियों पर आ पड़ी। राज्य-विजय से प्राप्त नारियाँ ऋषियों एवं पुरोहितों को दान दी जाने लगी। वहुपत्नी-प्रथा से नारी स्तरहीन वनी। वेद, कुल, आदि की दृष्टि से संपन्न वर-प्राप्ति के लिए 'वधू-दक्षिणा' (दहेज) प्रथा का प्रचलन हुआ।

उत्तर वैदिक काल में यज्ञों का आड़ंबर बढ़ने से पवित्रता, नियम, विधि, वेद-मंत्रों का शुद्ध उच्चारण आदि की ओर ध्यान दिया जाने लगा। इसके लिए विशिष्ट दीक्षित पुरोहितों की नियुक्ती होने के कारण नारी इससे वंचित होती रही। बौद्धिकता और वर्णव्यवस्था के स्तर पर स्त्री-पुरूष को असमान माना जाने लगा। नारी को सहचरी या सहयोगिनी के स्थान पर बाधक माना जाने लगा।

आशारानी व्होरा उत्तर वैदिक काल के संदर्भ में लिखती है - "बहुपत्नी प्रथा तथा अनुलोम विवाह प्रथा के कारण स्त्री का दर्जा और हीन हो गया। आर्यो की दक्षिणा विजय के साथ ही ये प्रथाएँ प्रचलित हो गयी थी। यही से यानी उत्तर वैदिक काल से ही भारतीय नारी की स्थिति में गिरावट का प्रारंभ मान लिया जाए तो अनुचित न होगा।"[24] अत: उत्तर वैदिक काल में बहुपत्नी-प्रथा, दहेज-प्रथा, नारी शिक्षा का अवरोध, स्त्री-पुरूष की विषमता, नारी स्वातंत्र्य-सत्ता-अधिकार का अभाव आदि के कारण नारी स्वत्व, अधिकार से वंचित होकर अपदस्थ बनी। इसीलिए उत्तर वैदिक काल या युग नारी समस्याओं का उद्गाता युग मानना समुचित हैं।

4. सूत्र ग्रंथ तथा महाकाव्य युग :

इस काल में नारी का व्यक्तित्व तथा अस्तित्व विनष्ट होने लगा और वह पुरूष संपत्ति मात्र बनी। बाल-विवाह, बहुपत्नी-प्रथा का प्रचलन रहा। विधवा-विवाह की मान्यता पर प्रतिबंध लगा। हर लड़की के लिए विवाह अनिवार्य हुआ। नारी के अपहरण की प्रवृत्ति एवं नारी को दाँव पर लगाने की प्रवृत्ति इसी युग की देन है। पुरूष की मनमानी से पीड़ित नारियाँ संशय के कारण घर से निर्वासित की जाती रही। स्वयंवर-प्रथा, नियोग-प्रथा आदि नारी की स्वतंत्रता की पुष्टि करनेवाली प्रथाएँ विद्यमान थी, किंतु फिर भी नारी को अधिकारों से पदच्युत किया गया।

इसी काल से नारी के लिए पतिव्रता धर्म ही सर्वोच्च धर्म एवं स्वर्ग-प्राप्ति का साधन माना जाने लगा। नारी पुरूष के दबाव में दबकर उसकी सहचारिणी की अपेक्षा अनुगामिनी बनकर सहिष्णुता, तप, त्याग, पातिव्रत्य आदि में अपने व्यक्तित्व विकास के लिए

कार्यरत रहीं। नारी पुरूष दासी के रूप में सम्मुख उपस्थित होने लगी। नारी की सक्रियता केवल चार दीवारियों के भीतर सीमित हो गई। समाज हेय दृष्टि से नारी के प्रति देखने लगा।

अत: इस प्रकार विविध नारी समस्याओं को समाज में पनपने का अवसर सूत्र ग्रंथ तथा महाकाव्य युग में मिला।

5. स्मृति युग :

स्मृति युग में आकर नारी स्वातंत्र्य का अस्तित्व ही विनष्ट हो गया। नारी की स्थिति अनेक सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप दयनीय एवं चिंतनीय बन गई। नारी-शिक्षा को समाज में स्थान नहीं रहा। बाल-विवाह याने आठ साल की आयु में लड़की का विवाह अनिवार्य हुआ। बहुविवाह पुरूषों के लिए गौरवयुक्त विषय था। सती-प्रथा का प्रचलन शनै: शनै: होने लगा। स्मृतिकारों ने नारी को एक और पूजनीय माना, तो दूसरी ओर नारी-स्वतंत्रतां पर कोड़े बरसाये। स्मृतिकारों ने आचार-संहिता दवारा अनेकानेक बंधंनों से जकड़कर आजीवन पुरूष के आश्रय और शासन में नारी को रखा।

स्मृति युग के संदर्भ में आशारानी व्होरा लिखती है कि - "स्मृति काल में आकर स्त्री की स्थिति में और गिरावट आयी। वह केवल माता के रूप में आदर की पात्र रह गई। एक स्त्री, पत्नी और प्रेयसी के रूप में उसकी प्रतिष्ठा न रही।"[25] अत: स्मृति युग की नारी परवश, चार दीवारी में बंद, पुरूष-अंकुश से पीड़ित, स्वातंत्र्यविहीन, जीवन-यापन के लिए मजबूर थी। वह नारी अधिकार वंचित एवं पुरूष की आश्रिता थी।

6. मध्य युग :

मध्य युग अर्थात् अँग्रेज पूर्व युग में राजकीय एवं सामाजिक परिवर्तनों के कारण नारी का स्थान गौण वनता गया। मुसलमानों के आक्रमण और मुगलों के राज्य के कारण लड़कियों का अपहरण होने लगा। अत: असुरक्षा भय के कारण लड़कियों का अत्यल्प आयु में विवाह होने लगा। रक्त की शुद्धता, स्त्री-सतीत्व की रक्षा के लिए नारी को सामाजिक तथा पारिवारिक वंधन तैय हुए जिससे नारी-अस्तित्व का दम घुटने लगा। नारी-शिक्षा को अनावश्यक घोषित किया गया। जरठ-कुमारी विवाह, वाल-विवाह,

सती-प्रथा, देवदासी-प्रथा, पर्दा-प्रथा आदि तथा ब्राह्मणों ने समाज मनोभावों में परिवर्तन कर नारी-जीवन को नकाशीदार कनकपात्र में भरे विष-समान वनाया। कवीर जैसे भक्तिकालीन कवियों ने माया, ठगिनी कहकर निंदा की। अधिकारविहीन नारी के लिए विकास मार्ग अवरूद्ध बने तथा पत्नीत्व एवं मातृत्व ही नारी-जीवन का अंतिम लक्ष्य बना।

इसी काल के उत्तरार्ध में नारी बादशहा के दरबार की मनोरंजन करनेवाली श्रृंगारयुक्त कटपुतली बनी। इसकाल की नारी मनोविनोद, विलसिता, कामोपभोग, वासनापूर्ति के साधन के रूप में बनी रही। बिहारी आदि कवियों ने नारी के विविध अंग-प्रत्यंगों पर लेखनी चलाकर श्रृगांर रसयुक्त काव्य में सहृदय पाठकों को अप्लावित किया और नारी के आंतरिक भावसुमनों के प्रति उपेक्षा की दृष्टि से देखा। डॉ० राजरानी शर्मा का कहना है कि - "नारी के प्रति भक्तिकाल की दृष्टि वैराग्यमूलक तथा उपेक्षापूर्ण है, तो रीतिकाल में यह मनोविनोद तथा ऐंद्रिक सुख प्राप्ति का सहज साधन। नारी जब इस प्रकार से पुरूष के मन बहलाव और तृप्ति के साधन के रूप में उपस्थित हुई तो उसे सम्मान देने का प्रश्न ही नहीं उठता।"[26]

इस प्रकार मध्य युग की नारी कु प्रथाओं, विविध बंधन, शिक्षा-अभाव, संकुचित दृष्टिकोण, आदि के कारण उच्च एवं उदात्त पद से विहीन, शोषण की शिकार, संकटग्रस्त-जीवन से मुक्ति की छटपटाहट से युक्त नारी केवल भोग और विलास की साधन-मात्र बन कर रह गयी।

7. आधुनिक कालखंड या युग :

आधुनिक युग के आरंभ में नारी स्थिति में परिवर्तन की संभावना नहीं रही। किंतु आधुनिक काल में केशवचंद्र सेन, स्वामी दयानंद, म० फुले, म० गांधी, महर्षि धोंडो केशव कर्वे, आदि महानुभावों द्वारा नारी-मुक्ति एवं समाज-सुधार के लिए प्रयास होने लगे। इन महापुरूषों द्वारा सत्यशोधक समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, ब्राह्मो समाज, आर्य समाज आदि संस्थाओं का निर्माण हुआ, जो समाज-सुधार के प्रति कटिबद्ध रही।

राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित 'ब्राह्मो समाज' (1828) के फलस्वरूप वाल-विवाह, वहुविवाह, पर्दा-प्रथा का विरोध तथा स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह को प्रोत्साहन मिला। 'प्रार्थना समाज (1867) ने नारी शोषण के विरोध में आवाज उठाई। स्वामी दयानंद ने 'आर्य समाज' (1867) की स्थापना कर नारी जागृति और मुक्ति - मानसिक एवं सामाजिक दास्यत्व की मुक्ति के लिए प्रयास किये। स्वामी विवेकानंद जी ने 'रामकृष्ण मिशन' द्वारा नारी की आत्म चेतना के लिए नारी शिक्षा अनिवार्य मानकर, नारी को शिक्षा के लिए प्रेरणा प्रदान की। स्वामी विवेकानंद कहते है - "हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए, जहाँ वे अपनी समस्या को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। उनके लिए यह काम न कोई कर सकता है और न किसी को करना ही चाहिए और हमारी भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भाँति इसे करने की क्षमता रखती है।"[27]

नारी की स्थिति में अमूलाग्र परिवर्तन म० फुले एवं उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने किया। उन्होंने स्त्री-शिक्षा के प्रति समाज का लक्ष्य केंद्रित किया। म० गांधीजी ने स्त्री-पुरूष को समान मानते हुए पुरूष के समान ही नारी स्वतंत्रता की माँग की। विदेशी महिला एनी बेझेंट जे 'थियोसोफिकल सोसायटी' द्वारा बाल-विवाह का प्रखर विरोध कर दुर्द शाग्रस्त भारतीय नारी की मुक्ति का प्रयास किया।

आधुनिक काल के आरंभ में नारी की स्थिति दयनीय थी। इसके संदर्भ में कथन द्रष्टव्य है - "अंधविश्वास, निरक्षरता और अज्ञानता स्त्रियों की सभी समस्याओं के मूल में थे। इसीलिए ..... सुधारकों का ध्यान सामाजिक सुधार व स्त्री शिक्षा की ओर साथ-साथ गया।"[28] भारत के स्वतंत्रता के पश्चात् सरकार द्वारा विविध कानून वने, जिससे नारी की स्वतंत्रता एवं अधिकार की सुरक्षा हो सकी। स्वतंत्रता पश्चात् नारी-शिक्षा, नारी-स्वातंत्र्य, नारी-अधिकार के कारण वाल-विवाह, पर्दा-प्रथा आदि कु-प्रथाओं का शमन हुआ, जिससे नारी विविध क्षेत्रों में प्रवेश कर अपने विकास की ओर अग्रेसर होने लगी।

अत: आधुनिक काल में नारी संघर्षात्मक, द्वंद्वात्मक स्थिति से गुजरने लगी।

8. उत्तर आधुनिक कालखंड या युग :

उत्तर आधुनिक काल में नारी को स्वतंत्रता एवं अधिकार प्राप्त हैं, किंतु उससे वह समस्या मुक्त नहीं हो सकी है। विविध क्षेत्रो में कार्यरत नारी का यौन-शोषण की बात समय-समय पर सामने आती है। नगर-महानगर की नारी परिवार के लिए अर्थ का साधन है। इस स्थिति में लड़कियों की शादी कराने की परिवारवालों की अनिच्छा होती हैं, जिससे वह लड़कियाँ कुंठाजन्य या चरित्रहीन होकर रह जाती हैं।

इस वर्तमान समय में जरा-जरा-सी बात पर विवाह-विच्छेद की प्रवृत्ति नारी में बढ़ने लगी। नारी के लिए पतिव्रत्य जैसे बातों का महत्व न रहा। कई नारियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए विवाह बंधन को नकारने लगी। कामकाजी महिलाओं की समस्या का सूत्रपात हुआ। महानगरों में नारी की ओर अर्थाजन के स्रोत के रूप में देखा जाने लगा। कु-प्रथाओं का शमन अत्यधिक मात्रा में हो चुका हैं, किंतु फिर भी कई रूढ़ि परंपराएँ आज भी विद्यमान हैं। अविवाहित नारी, विधवा, परित्यक्ता आदि नारियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण आज भी सरल, मानवीय नहीं है। उसे हिनता की दृष्टि से देखा जाता है।

अत: उत्तर आधुनिक काल में नारी कानूनन सुरक्षित है, किंतु फिर भी उसके सम्मुख अन्य अनेक समस्याएँ आधुनिकता एवं उत्तर-आधुनिकता के फलस्वरूप उपस्थित हैं।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि नारी कि स्थिति प्रागैतिहासिक युग से वैदिक युग तक सम्मानजनक थी। किंतु उत्तर वैदिक युग के आरंभ से नारी स्थिति में परिवर्तन होने लगा और वह समस्या ग्रस्त बनी। इन समस्याओं ने विविध रूपों में उत्तर वैदिक युग से वर्तमान - उत्तर आधुनिक काल तक पीछा किया। अत: वह आज तक समस्याओं से ग्रस्त हैं।

4.1.5 नारीवाद : (Feminism)

नारीवाद इस विचारधारा का उद्‌भव पुरूष-सत्ता की प्रतिक्रिया के रूप में नारी समर्थन के लिए हुआ। समाजशास्त्र विश्वकोश के अनुसार - "जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के बराबर स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन को नारीवाद या महिलावाद का नाम दिया गया

है।"[29] नारीवाद की संकुचित एवं विस्तृत अर्थ में व्याख्या की जाती है। संकुचित अर्थ में नारीवाद को नारी-समानता पुरूष-सत्ता के प्रतिविरोध, सामाजिक शोषण के विरोध के लिए किया गया सामाजिक आंदोलन मानते हैं, तो विस्तृत अर्थ में नारीवाद लिंग का सामाजिक यथार्थ एवं असमानता के निर्माण, प्रभाव, परिणाम का अध्ययन के पश्चात् विश्लेषण तथा विवेचन प्रस्तुत करता हैं।

अनुमानत: नारीवाद का जन्म 18 वी शती के अंत में युरोप में हुआ। आज इस का फैलाव सभी देशों में न्यूनाधिक मात्रा में दृष्टिगत होता है। नारीवाद के आरंभ का बीज फ्रांस की क्रांति में छुपा है। लेखिका सिनेमा द बुआ (द सेकेंड़ सेक्स), बैट्टी फ्रेड़न (फेमिनिन मिस्टिक), मेरी बूलस्टोनक्राफ्ट (ए विनड़िकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमन), दवारा नारीवाद की प्रथन लहर युरोप में उठी। शिक्षा, अधिकार, व्यवसाय में प्रवेश, तलाक, संपत्ति का वैयक्तिक अधिकार, समानता और सुरक्षा के लिए नारी ने नारीवाद को प्रश्रय देकर आंदोलन किया। नारी के अधिकार, सम्मान, उन्नति एवं समानता के लिए नारीवादी आंदोलन चलता रहा।

नारीवाद को महिलावाद भी कहा जाता है, जिसको उदारवाद, मार्क्सवाद एवं रेडिकल के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है - "उदारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार लिंग असमानता मुख्यत: सामाजीकरण का परिणाम है, जो पुरूषों और स्त्रियों के संबंध में व्यक्तियों के विकृत एवं हानिकारक विचारों को उत्पन्न करता है। इसके साथ-साथ कुछ सांस्कृतिक प्रथाएँ भी हैं, जो लैंगिक असमानता के लिये उत्तरदायी हैं। मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य महिलावाद को सीधे पूँजीवाद तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था से जोडता है। रेडिकल परिप्रेक्ष्य के अनुसार, लिंग असमानता तो अज्ञान तथा स्वतंत्रता के अभाव के कारण और न ही पूंजीवाद के कारण है, अपितु यह तो पुरूषों दवारा स्त्रियों पर प्रभुत्व, नियंत्रण और शोषण के उनके सामूहिक प्रयासों का प्रतिफल है।"[30]

नारीवादी आदोंलनों ने पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित कर समाज को नारी की स्थिति पर सोचने के लिए मजवूर किया तथा नारी उन्नति के लिए प्रयास किये। भारत में भी

19 वीं शताब्दी से नारी स्थिति सुधार प्रति कटिबद्धता दिखाई देने लगी। नारीवाद को हिंदी साहित्य में प्रश्रय महादेवी वर्मा की कृति 'श्रृखंला की कड़ियाँ' से प्राप्त हुआ। तदोपरांत हिंदी साहित्य जगत् में महिला लेखिकाओं ने नारी की मुक्ति को प्रेरणा देनेवाले नारीवादी साहित्य का सृजन कर उसे विकसित किया। इन्हीं लेखिकाओं में से एक है - डॉ० राज बुद्धिराजा।

4.2 'कावेरी' उपन्यास में चित्रित नारी-जीवन की समस्याएँ :

भारतीय नारी को समस्याओं की वसियत विरासत में मिली हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् नारी को संवैधानिक समानाधिकार मिलने के बावजूद नारी की स्थिति में कोई खास परिवर्तन दिखाई नहीं देता। आशारानी व्होरा इस संदर्भ में लिखती है - "स्वतंत्रता के इतने वर्षो बाद भी संवैधानिक समानाधिकारों की गारंटी के बावजूद भारतीय नारी की दशा दयनीय से कुछ ही ऊपर उठ पाई है।"31 अत: स्वातत्र्योत्तर काल में भी भारतीय नारी की समस्याएँ विद्यमान है। उन्हीं समस्याओं को लेखिका डॉ० राज बुद्धिराजा ने अपनी औपन्यासिक कलाकृति 'कावेरी' में उठाया है, जो इस प्रकार हैं -

4.2.1 परित्यक्ता नारी की समस्या :

पति द्वारा किसी कारण पत्नी को त्याग दिया जाता है, तब वह विवाहिता परित्यक्ता कहलाती है। नारी कभी स्वयं विवाहविच्छेद कर लेती है। प्राय: पति ही पत्नी को विवाहविच्छेद के लिए मजबूर करता है और अनिच्छा से ही नारी को परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। परित्यक्ता नारी को पति के साथ ही अपनी इच्छा-आकांक्षाओं का भी त्याग करना पड़ता है।

कावेरी के साथ उसके बचपन के मित्र के अनैतिक संबंध होने का आरोप लगाकर कावेरी के पति ने कावेरी को त्याग दिया है। अत: कावेरी एक परित्यक्ता नारी है। पति से दूर होने पर उसने दूसरा विवाह भी नहीं किया। पुरूष के साथ न रहनेवाली नारी को सभी लोग बीच चौराहे पर गिराने में लगे रहते है। किंतु फिर भी कावेरी अपने जीवन में दूसरे पुरूष को स्थान नहीं देती। कावेरी पर बच्चों की जिम्मेदारी होने के कारण वह चाहकर भी दूसरा विवाह नहीं कर सकती।

परित्यक्ता कावेरी पर समाज के लोग वार-पर-वार करते हैं। कावेरी पर परपुरूष के साथ संवंध रखने का आरोप लगाकर उसका चारित्रिक पतन किया जाता है। पुरूष की छत्रछाया में न रहनेवाली कावेरी निहत्थी होकर समाज में विचरण करती है। कावेरी की सहेली सुधि कावेरी के संदर्भ में उर्मि को लिखती है ... "... चक्रव्यूह भेद किसी निहत्थे पर वार कर मुझे ही क्या मिल जायेगा? वैसे उन्होंने अपने इर्द-गिर्द इस तरह की किलेबंदी कर रक्खी है कि उनके निहत्थेपन को कोई देख ही नहीं पाता। मगर फिर भी चोट करनेवाला तो केवल चोट करना ही जानता है। इससे अगली दुनिया से उसका कोई वास्ता नहीं रहता।"[32]

कावेरी के बच्चे-अनु-शांतनु अपनी-अपनी घर-गृहस्थी में मग्न हैं। उन्हें कावेरी की पूछ-ताछ के लिए भी उनके पास समय नहीं हैं। वे अपने परिवार में खुश हैं। कावेरी अपनी सहेली चैती से कहती है - "कुछ दिन को तुम आ जाना। बारी-बारी से अनु-शांतनु आते-जाते रहेंगे और कभी-कभार साथवाले डॉक्टर साहब आ जायेंगे। इसी तरह जिंदगी कट जायेगी। इससे बेहतर जिंदगी की तम्मन्ना भी क्या करनी। सच चेती ! पुराने घावों का हरापन बराबर इस तरह छूता रहता है कि किसी भी पतझड़ की ओर नजर नहीं जाती। चलते-चलते पैर लहू-लहान हो गए हैं री। तुम्हारे पास वक्त हो तो तुम्हीं पोछ दो न।"[33] इस प्रकार कावेरी परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करती है। कावेरी को न बच्चों से प्यार-दुलार मिलता है, न सगे-संबंधियों एवं पास-पड़ोसवालों से। इसी कारण कावेरी का जीवन दुखद वन गया है।

अंत में कहा जा सकता है कि लेखिका ने परित्यक्ता नारी के जीवन को अंकित करते हुई उसकी समस्याओं को वाणी प्रदान की हैं।

4.2.2 अकेलेपन की समस्या :

यांत्रिकता, वेकारी, औदयोगीकरण आदि के कारण मनुष्य का अकेलापन वढ़ता जा रहा है। आधुनिकीकरण के प्रभावस्वरूप नारी अकेलेपन की समस्या से संत्रस्त है। इस बारे में डॉ० शीलप्रभा वर्मा लिखती है - "आधुनिक समाज में एकाकी नारी जीवन का प्रचलन वढ़ रहा है। समाज एकाकी नारी के जीवन में विभिन्न प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न

करता है। उसे शारीरिक व मानसिक कष्ट देना चाहता है। इन सभी कष्टों से जूझती हुई आज की नारी एकाकी जीवन व्यतीत करती है।"[34] अत: नारी को अकेलेपन को लेकर जीना पड़ता है, जो नारी के लिए अभिशाप है।

कावेरी अपने बचपन से अकेलेपन को महसूस करती रही है। वह बचपन में शरारत, खेलकूद, हँसी-मजाक, दोस्ती से दूर रही है। जब कावेरी को पति ने त्याग दिया तो वह अपने मायकेवालों के पास न जाकर स्वतंत्र रूप में रहने लगती है। उसकी खोज-खबर न ससुराल-वाले लेते है, न मायकेवाले। उसे अकेलेपन के साथ जीना पड़ता है और जब उसका बेटा एवं बेटी अपने परिवार में रम जाते है, तो उन्हें कावेरी के बारे में कोई चिंता नहीं है। कावेरी अकेली पड़ जाती है।

अपनी बेटी अनु के आने से कावेरी चहकने लगी थी। अकेलेपन में रहते-रहते कावेरी ऊब चुकी थी। बेटी के आने की खबर ने उनके चेहरे पर आनंद और उत्साह दिखाई देने लगा। वह उसके स्वागत की तैयारी में लगी रही, किंतु अनु है कि उसे अपने काम से फुरसत ही नहीं मिलती। अत: कावेरी अकेली पड़ जाती है। इस संदर्भ में सुधि का कथन दृष्टव्य है - "यह सब तो बेटे-बेटियों को सोचना चाहिए कि उनके रहते वे अकेलेपन की यंत्रणा भोग रही है। यूँ तो हर आदमी को अपना-अपना अकेलापन खुद ही भरना पड़ता है। मगर इस तरह का अकेलापन यदि नकाब जैसी चीजों से भरा जा सकता तो हर आदमी भर लेता।"[35]

कावेरी बैठे-बैठे एक अनाम दुनियाँ में पहुँच जाती है। उसके चेहरे को देखने से पता-चलता है कि वह किसी भयानक जंगल में अकेले-अकेले सहम कर कदम रख रही हो। कावेरी अपने अकेलेपन की यंत्रणा को भोग रही है, जिसके बारे में कावेरी के बच्चे सोचते तक नहीं हैं। हर आदमी को अपना अकेलापन स्वयं को ही दूर करना होता है, कावेरी का अकेलापन किसी नकाब को ओढ़ लेने से दूर होनेवाला नहीं है।

अकेलेपन से व्याप्त कावेरी कभी-कभी अपने विचारों में ही खो जाती है। कभी-कभी आँखों से आँसू की धारा बहाने लगती है। इस संदर्भ में सुधि उर्मि को लिखती है

- "कभी वे हथेलियों के समुद्र में गहरी डुबकी लगा आती और कभी मेरे कंधों पर गंगा-यमुना वहाने लगती वहुत लोगों को अकेलेपन में जीते देखा है, मगर इस तरह जी-जान खपाकर जीते किसी को नहीं देखा।"[36]

अत: 'कावेरी' उपन्यास की नायिका कावेरी अकेलेपन की समस्या से ग्रस्त नारी है।

4.2.3 प्रेम - विवाह एवं पुनर्विवाह की समस्या :

मानवीय मूल्यों में प्रेम का अनन्यसाधारण महत्व है। प्रेम ही मानव में रंग भरने का काम करता है। डॉ० राधाकृष्णन लिखते है - "When the natural instinct of sex is guided by brain and heart, by intelligence and imagination , we have love. Love is neither mystic adoration nor animal indulgence. It is the attraction of one human being to another, under the guidance of the highest sentiments."[37] अर्थात् तब काम भावना की नैसर्गिक सहज प्रवृत्ति मस्तिष्क और हृदय, वुद्धि और कल्पना द्वारा मार्ग दिखलाती है, जब उसका परिणाम प्रेम होता है। प्रेम न तो रहस्यमयी भावना है और न ही पाशविक भोग। वह सर्वोच्च भावों के मार्गदर्शन के अधीन एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति आकर्षण है। अत: प्रेम उच्चतम मानवीय मूल्य है।

डॉक्टर साहव के जीवन में प्रवेश करने से कावेरी खुश है। डॉक्टर साहव कावेरी से प्रेम करते है। डॉक्टर साहव ने कावेरी के लिए रूवाइयाँ लिखना शुरू किया हैं। उनके हाठें पर केवल कावेरी का ही नाम है। वे कावेरी को जन्म-दिन की मुवारक वात देते हैं। जवकि उसके जन्म से उसके माता-पिता भी खुश नहीं थे।

कावेरी भी डॉक्टर साहव से प्रेम करने लगी है। डॉक्टर साहव को देखकर कावेरी क चेहरे खिलने लगता है। उनमें वह अपने सपने के राजकुमार को देखती है। डॉक्टर ने कावेरी के रंगहीन जीवन में रंग भरने का काम किया है। कावरी लोकलाजवश उनसे पुनर्विवाह नहीं कर सकती। वह डॉक्टर साहव के वारे में डायरी में लिखती है - "अपने डॉक्टर साहव को भी उजाले में देखती रहती हूँ और उसी उजाले में लगता है कि कोई

राजकुमारी चाँदी के रथ पर सवार हो मेरी माँग भरने आया है।"[38] लेकिन कावेरी अपने प्रेम को उनके प्रति व्यक्त करना नहीं चाहती, जिससे उसे वदनामी का सामना करना पड़े।

डॉक्टर साहब ने कावेरी के जीवन में प्रवेश किया है। डॉक्टर साहब के प्रवेश से उसके जीवन में आ रहे परिवर्तन की ओर संकेत करते हुए कावेरी लिखती है - "अब तक जिस घर के रंग धुंधले पड़ गए थे उसे फिर से रंगने का काम डॉक्टर साहब ने शुरू कर दिया था। क्या वे रंग पायेंगे? या मैं ही उन्हें रंगने की इजाजत दे दूँगी। क्या सोचेंगे सब लोग? इस बुढ़ापे में? हुँ ! सोचने दो जो सोचते है ! लोगों ने ही मेरे साथ कौन शतरंज की गोटियाँ नहीं चली। गोटियाँ बिठाते-बिठाते ही जिंदगी गुजर गई।"[39]

अंतत: कावेरी अपने बच्चों, अपने बुढ़ापे की बजह से और लोकलाज के कारण प्रेम-विवाह एंव पुनर्विवाह नहीं करती। परित्यक्ताा नारी के लिए नया घर बसाना आसान नहीं होता और अगर बच्चे हो तो और अधिक समस्या पैदा हो जाती है, इसका चित्रण सफलता से लेखिका ने किया है।

4.2.4 कामकाजी नारी की समस्या :

स्वातंत्र्योत्तर काल में विविध क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी बुदधि एवं प्रतिभा के दवारा विविध पदों पर कार्य करना आरंभ किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में परिवर्तित नारी जीवन पर डॉ॰ ज्ञान अस्थाना इन शद्वों में प्रकाश डालती हैं - "पश्चिमी सभ्यता और शिक्षा ने हमारी सुप्त चेतना को झकझोरा और नारी ने अपना घूँघट हटाकर पैरों की जंजीरों को तोड़ खुले आसमान के नीचे साँस ली। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी की समुचित प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए।"[40] इसका प्रतिफलन है कि आज सभी क्षेत्रों में नारी अपनी कार्य क्षमता का परिचय दे रही है। महिला बुदधि और प्रतिभा में पुरूष से कम नहीं है, इसका प्रमाण महिला अपने कार्यकुशलता से दे रही है। किंतु कामकाजी नारी अपनी समस्याओं से मुक्त नहीं हो सकी है।

कावेरी की सहेली सुधि अपने घरेलू कामकाज के साथ-साथ नौकरी भी करती है। अत: वह एक कामकाजी नारी है। काम में वह इतनी व्यस्त होती है कि उसे अपनी

सहेली उर्मि को पत्र लिखने की भी फुरसत नहीं मिलती है। इस व्यथा को वह उर्मि को खत में लिखती है - "क्या करम लेकर आयी थी धरा-धाम पर ! घर-वाहर के ढेरों काम एक साथ करते जाओ और कमर तक सीधी करने को वक्त न मिले।"[41]

घर-बाहर के कामकाज को ढोते-ढोते सुधि की उंगलियों की पोर-पोर दुखने लगी है। वह ऊब चुकी है। वह चैती की तरह ही घरेलू औरत बनकर इत्मीनान से महावर रचकर उत्सव-पर्व में पति से साड़ी के लिए मिन्नत-खुशामद करना पसंद करती, किंतु नौकरी कर के उसे अपना घर चलाना पड़ता है। इसलिए वह नौकरी करती है। सुधि का नौकरी करना रवि को अच्छा नहीं लगता। रवि की मनपसंद कमीज प्रेस न होने पर वह सुधि को पीटता था। लेकिन वह यह नहीं सोचता कि सुधि नौकरी करती है, वह थक भी सकती है।

कामकाजी नारी - सुधि अपनी सहेली से मिल नहीं पाती, किंतु डाक सेवा से वह अपने विचारों को आदान-प्रदान करती है; जिसके लिए सुधि डाक सेवा को धन्यवाद देती है। कावेरी भी कामकाजी नारी है। उसके बारे में सुधि लिखती है - "पैंतालीस तक पहुँचते न पहुँचते प्रोफेसर बन जाना और युनिवर्सिटी में सब पर हावी हो जाना उन्हीं का ही काम था। नहीं तो जिस तरह के अस्त्र-शस्त्र के वार उन पर होते रहे - मेरी जैसी महिला तो देखकर ही काँपने लगती। ऐसी फाटकर पिलाती कि सब की घिग्घी बंध जाती।"[42]

इस तरह डॉ० राज बुद्धिराजा ने कामकाजी नारी की घर-बाहर की समस्या को अंकित किया है, जो उनकी स्वानुभूति का प्रतिफलन है। क्योंकि उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि - " 'कावेरी' उपन्यास में मेरा भोगा हुआ सच है।"[43] अत: कहने की आवश्यकता नहीं कि कामकाजी नारी की समस्याएँ भी डॉ० वुद्धिराजा की स्वानुभूति से प्रसूत हुई हैं।

4.2.5 पराश्रिता या परनिर्भरता की समस्या :

समकालीन महिलाओं को अपने पति,पिता, भाई आदि पर आश्रित रहना पसंद नहीं, वल्कि वे अपने पैरों पर खड़ा रहने की उम्मींद रखती है। इस संदर्भ में किरणवाला अरोड़ा लिखती है - "आज की नारी प्राचीन काल की नारी से अधिक प्रवुद्ध है और उसमें अपने अधिकारों के प्रति एक चेतना जागृत हुई है। वह अपनी समस्याओं के प्रति भी

जागरूक दिखाई देती है।"[44] वे नारियाँ किसी पर आश्रित रहने की अपेक्षा खुद के पैरों पर खड़े रहने के लिए विविध क्षेत्रों में अपनी किस्मत आजमा रही हैं।

आम भारतीय नारी को परनिर्भरता का अभिशाप जन्मजात विरासत के रूप में मिलता रहा है। आज भले ही नारी स्वयं निर्भर बन रही है, फिर भी अधिकांश महिलाएँ परनिर्भर हैं। नारी पिता, भाई, पति, बेटा आदि के सहारे अपना जीवन-ज्ञापन करती रहती हैं। इसलिए वह परनिर्भर होती है। सुधि अपनी परनिर्भरता की ओर संकेत करते हुए कहती है - "एक हम थे कि दस बारह साल की उमर में भी अम्मा-पापा की उंगली पकड़-पकड़ चला करते थे। जो छुटपन में सीख जायें वही बढ़ियाँ। नहीं तो बरसों बरस फलांगने के बाद भी उनके लिए बैसाखियां भी मुझे ही बनानी पड़ेंगी।"[45]

सुधि भी अपनी सहेली चैती की परनिर्भरता से प्रभावित होकर उसकी तरह पति पर निर्भर रहना चाहती है। वह कहती है - "... यदि यह सब हथेलियों में कैद होने लगता तो मैं भी यूं ही नौकरी के मोह में नहीं पड़ी रहती। घरेलू औरतों की तरह इत्मीनान से महावर रचाकर बैठी रहती और दीवाली में चैती की तरह साड़ी खरीदने के लिए बच्चों के जनक की मिन्नत-खुशामद करती रहती।"[46] चैती अपनी पति पर निर्भर होने के कारण पति से पीटती रहती है, किंतु उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

अंत में कहा जा सकता है कि - भारतीय नारी की परनिर्भरता की समस्या का लेखिका ने उपन्यास में उद्‌घाटन किया है।

4.2.6 बदनामी एवं चारित्रिक पतन की समस्या :

नारी की सबसे बड़ी शक्ति उसका शुद्‌ध चारित्र्य होता है। समाज में पतिव्रता या शुद्‌ध चरित्र की नारी को पूज्य माना जाता है, तो चारित्रिक दृष्टि से अशुद्‌ध नारी समाज नीच दृष्टि से देखा जाता है। इस संदर्भ में डॉ॰ रमेश देशमुख का कथन द्रष्टव्य है - "भारतीय परिवेश में काम को गुप्त माना गया है और विवाहेत्तर काम संबंधों को दुश्चरित्रता का पर्याय माना गया है।"[47] परिणाम स्वरूप किसी स्त्री को यदि समाज में नीचा दिखाना हो तो सबसे पहले उसके चारित्रिक पतन की अफवाएँ फैलायी जाती। यह स्थिति प्राय: नौकरी पेशा नारी

और राजनीति में कार्यरत नारी के बारे में घटित होती, दृष्टिगत होती है।

विविध क्षेत्रों में कार्यरत नारी को समाज द्वारा किस तरह वदनामी का सामना करना पड़ता है एवं उसका चारित्रिक पतन किस तरह किया जाता है ? इसका श्रेष्ठ उदाहरण 'कावेरी' उपन्यास में मिलता है।

कावेरी बचपन में जब गुड़ियों के खेल खेला करती थी, तब ईसू नाम का बच्चा भी उनके साथ खेला करता था। वही ईसू बड़ा होने पर कावेरी के पति को बताता है कि - वह कावेरी के साथ शादी का खेल खेलता था। इस बात को सुनते ही कावेरी के पति ने कावेरी को बदचलन मानकर उसकी पिटाई की और बाद में कावेरी का परित्याग किया।

कावेरी एक विश्वविद्यालय की प्रोफेसर है। कावेरी के घमंड़ से अनेक लोग संत्रस्त है। वे लोग कावेरी के बारे में अनेक अफवाएँ फैलाते हैं तथा उसकी बदनामी कर उसके चरित्र का पतन करते है। इसके संदर्भ में सुधि लिखती हैं -

" 'वी॰ सी॰ की खास है।'

'घमंड़ के मारे पैर धरती पर नहीं टिकते।'

'घर गृहस्थी, आदमी के ठौर-ठिकाने का अता-पता नहीं।'

'खासियत' और 'अता-पता' पर ज्यादा जोर दिया जाता रहा।"[48]

इस प्रकार कावेरी के संदर्भ में अनेक अफवाएँ उठती है तथा उससे कावेरी की बदनामी होती रहती है।

अत: लेखिका डॉ॰ राज बुदधिराजा ने 'कावेरी' उपन्यास में कावेरी के माध्यम से कामकाजी महिलाओं की वदनामी एवं चारित्रिक पतन की समस्या को प्रखर वाणी देते है।

4.2.7 अज्ञान और अशिक्षा से पीड़ित नारी :

भारतीय जनता में शिक्षित लोगों की प्रतिशत वढ़ती जा रही है, किंतु गाँवों में अव भी अशिक्षित लोगों की संख्या काफी है, जिसमें अधिकतर मात्रा नारियों की है। उनमें अज्ञान और अशिक्षा व्याप्त होती है। वे पति भक्ति और परिवार तक ही स्वयं को सीमीत रखती हैं। वे शिक्षित वनकर समाज विकास में योगदान देने की वात नहीं सोच पाती हैं।

चैती एक ऐसी नारी है, जिसमें अज्ञान और अशिक्षा व्याप्त है। चैती स्कूल में जाती थी, किंतु उसका पढ़ाई में ध्यान अधिक नहीं था। वह केवल अपने दिलवहलाव के लिए स्कूल जाती थी। चैती सुधि को बताती है... ".....फिर हमें कौन नौकरी करनी। हम तो दिल वहलाने के लिए स्कूल चले जाते थे। गाँव के चार जमातवाले स्कूल की दीवारें यदि लांघ भी जाते तब भी कौन पढ़ाई करने शहर चले जाते। एक-एक क्लास में दो-दो साल पड़े रहे और मस्ती करते रहे। हमें कौन-सी वकालत करनी थी। जिंदगी भर ढोर-डंगर चराते थे, वही चराते रहे। गाय-भैंसों की जोड़ी को क्या पता कि उन्हें हांकनेवाला अनपढ़ है या पंड़ित-मौलवी। मायके में उपले थापते रहे और ससुराल में कुट्टी काटते रहे। बहुत हो लिया तो कभी गीता-रामायण बाँच ली। इससे ज्यादा हमें करना ही क्या है?"[49] अत: चैती अशिक्षा एवं अज्ञान से पीड़ित नारी है।

कावेरी चैती की बचपन की सहेली है, जो आगे पढ़ना चाहती है। चैती स्वयं तो अज्ञान से पीड़ित है हि, साथ ही वह अपनी सहेली कावेरी को भी आगे पढ़ाई के लिए रोकने का असफल प्रयास करती है। चैती का मानना है कि अगर कावेरी अनपढ़ रहती तो घर में बैठकर राज करती। पर उसे दुनिया भर की किताबें पढ़नी थी। इससे उसकी सेहत भी खराब होती रही है। चैती के शब्दों में "हमारी तरह उजड्ड-गंवार रहकर राज करती। नहीं जी ! उसे तो पोथियाँ चाटनी थी। दुनियां-जहान की किताबें पका-पका कर चाट डाली और सेहत वैसी की वैसी। यह भी किसी धरम-पुरान की वार्ता है कि किसी ने उंचा बोल दिया तो महीनों सोचते रहे। जब कुछ फायदा ही नहीं तो क्या सोचना, मुफ्त में सिर दर्द पाल लो और महीने दो महिने अस्पताल में भर्ती हो इलाज कराते रहो।"[50]

चैती ढोर-डंगर चराती है। वह घर पर डटकर खा-पी कर चादर ताने सोती है। अगर उसे कोई पीटता भी है, तो भी उसे कुछ असर नहीं पड़ता। वह मानती है कि पीटनेवाला भौं-भौं कर के खुद-व-खुद चुप हो जायेगा। इससे चैती के अज्ञान एवं अशिक्षा का ज्ञान हो जाता है। चैती जैसी नारियों पर आशारानी व्होरा का विधान है कि "सहते-सहते इनके मन-शरीर इतने कड़े या अभ्यस्त हो जाते हैं कि अपने सारे भोलेपन व निश्चलता के

बावजूद लड़ाई-भिड़ाई, गाली-गलौज, मारमीट, गरीबी, गंदगी और अभाव जैसे इनके जीवन का अंग बन जाते हैं।"[51] यह विधान चैती जैसी अज्ञान एवं अशिक्षा से पीड़ित नारी को चित्रित करने में सक्षम है।

अंतत: कहा जा सकता है कि लेखिका डॉ० राज बुद्धिराजा ने चैती के माध्यम से अशिक्षित भारतीय नारी के चरित्र के द्वारा उसकी समस्या को प्रस्तुत किया है।

4.2.8 अर्थार्जन का साधन नारी :

आज सभी संबंध अर्थ पर तैय होने लगे है। मानवीय मूल्यों की अपेक्षा वर्तमान समय में अर्थ ही प्रमुख बनता जा रहा है। अर्थ के सामने सभी अन्य बातें फीकी पड़ गयी है। डॉ० कीर्ति केसर के मतानुसार - "हमारे सभी सामाजिक संबंधों और पारिवारिक रिश्तों पर अर्थतंत्र हावी हो गया है।"[52] अत: अर्थ के अभाव में कोई रिश्तें-नातें या संबंध सुचारू रूप से संचलित नहीं हो सकते।

वर्तमान समय में नारी को अर्थार्जन के साधन के रूप में देखा जाता है। लड़की पढ़ लिखकर नौकरी करने लगे और अपने माता-पिता का परिवार चलाए, इस तरह की मानसिकता समाज में बढ़ने लगी है। माता-पिता भी अपनी कामानेवाली बेटी की शादी के लिए आना-कानी करते रहते है।

कावेरी भी अपने परिवार के लिए अर्थार्जन का साधन है। कावेरी नौकरी कर के अपने बच्चों को संभालती है तथा परिवार चलाती है। कावेरी लड़की होकर गालियाँ देती हैं, इस बात को माता-पिता के परिवार में सहन नहीं किया गया था। पति द्वारा त्याग देने पर कावेरी नौकरी करने लगती है, तब उसके परिवारवाले कावेरी को अर्थार्जन के साधन के रूप में देखते है। वह अपनी डायरी में लिखती है कि - "आज सोचती हूँ तब लड़की होकर सिर्फ गाली देती थी। अब लड़की होकर नौकरी करती हूँ कई तरह के मौसम सहती हूँ। मनों-मनों बोझ ढ़ोती हूँ। गाली देने पर सब को ऐतराज था। नौकरी करने पर और दर-दर ठोकरें खाने पर किसी को ऐतराज नहीं हुआ। कोई बोल भी तो नहीं फूटा - 'कावेरी ! हमारे रहते तुम्हें काहे कमाने-धमाने की चिंता लग गई.....' "[53] इस प्रकार कावेरी परिवार के लिए अर्थार्जन

का साधन बन गई है। तो सुधि भी नौकरी कर अपने परिवार को चलाती है, जिसके कारण वह भी परिवार के लिए मात्र अर्थार्जन का साधन है।

लेखिका ने कावेरी एवं सुधि के माध्यम से परिवार के लिए अर्थार्जन का साधन बनती नारी पर प्रकाश डालते हुए समसामायिक नारी-जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत किया है।

4.2.9 प्रेम से वंचित नारी की समस्या :

दांपत्य प्रेम में पति-पत्नी के मध्य विशुद्ध प्रेम की अपेक्षा शारीरिक प्रेम को अधिक महत्व दिया जाता है। किंतु नारी शारीरिक प्रेम की अपेक्षा विशुद्ध प्रेम की इच्छा रखती है, जो उसे अप्राप्य रहता है। डॉ० राजरानी शर्मा नारी के प्रेम की आकांक्षा पर प्रकाश डालती हैं - "प्रणय का अर्थ नारी और पुरूष के लिए समान नहीं होता। पुरूष प्रेम का प्रतिदान चाहता है, किंतु नारी खुद को भूल जाती है। सच्चा प्रेम वही कहलाता है, जिसमें त्याग की भावना होती है। प्रेम के प्रवाह में बुद्धि और तर्क तथा मर्यादा प्राय: छूट जाती है। वस्तुत: प्रेम मन की वस्तु है, जिनमें विचारों की नहीं भावना की प्रधानता होती है। स्त्री के जीवन में शारीरिक प्रेम की कोई बहुत महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती। एक स्त्री के लिए वह प्रेम अधिक महत्वपूर्ण होता है, जो शारीरिक प्रेम से परे होता है।"[54] लेकिन कावेरी के लिए यह प्रेम प्राप्त नहीं होता।

'कावेरी' उपन्यास के तीनों पात्र-कावेरी, उर्मि, सुधि अपने परिवार एवं पति के प्रेम से वंचित है। कावेरी को पति ने त्याग दिया है, साथ ही उसे परिवार से दूर रहना पड़ रहा है। उर्मि का पति-अजित भी उसे प्रेम नहीं दे पाता है। सुधि का पति-रवि उस पर हमेशा रोब झाड़ता है तथा उसे मार-पीट भी करता है। ये नारियाँ भारतीय रूढ़िग्रस्त समाज और पुरूष-प्रधान संस्कृति के परिणाम स्वरूप नारी प्रेम के अभाव में कुंठित बनी है। नि:स्वार्थ प्रेम के अभाव में पति-पत्नी, माँ-पुत्र, माँ-पुत्री संबंधों में दूरियाँ आना स्वाभाविक है।

कावेरी न अपने पति से प्रेम पाती है, न ससुरालवालों से। उसे बचपन में भी माता-पिता का प्रेम न मिल सका। कावेरी की बेटी एवं बेटा अपने परिवार में अलग-अलग

रहते है, उनसे भी कावेरी को प्रेम न मिल सका। कावेरी चैती से कहती है - "अव विलकुल मन नहीं लगता चैती! अव तक वच्चों के लिए करती थी, अव वे भी अपने-अपने घरवाले वन गये। अब किसके लिए क्या क्या करूँ? गलत किया या ठीक, नहीं जानती, पर इतना जरूर है कि बाल-बच्चों की शकल-सूरत बनाने में अपनी सूरत बिगाड़ ली। अपने लिए भी एक घर बनाने को मन करता है चैती। कोई मेरी जिम्मेदारी ओढ़ ले, मेरी थकान के पाँव फैल जाए, कोई मेरे बालों, जिस्म को सहलाता रहे और मैं चुपचाप उसकी बाँहों में पड़ी रहूँ। पर चाहने से क्या होता है? कोई इतना भी नहीं पूछता कि कहाँ दुखता है कावेरी ?"[55] इस प्रकार कावेरी प्रेम के लिए छटपटाती है, किंतु वह उसे अप्राप्य है।

कावेरी के जीवन में प्रेम की बहार लेकर डॉक्टर आते है, किंतु वह कावेरी को अपने प्रेम में बांध नहीं पाते। अत: वह दिल्ली चली जाती है। डॉ॰ मोहन सावंत के मतानुसार - "(डॉ॰ राज बुद्धिराजा) उनके साहित्य में प्रेम के आशावादी और निराशावादी, सफल और असफल दोनों पक्षों का चित्रण नहीं पाया जाता तो अधिकांश रूप में उनके साहित्य की नारी आजीवन प्रेम पाने के लिए तरसती रही है। उसे लड़की होने के कारण न माँ-बाप से प्रेम मिलता है, न पुरूष से प्रेम के दो लफ्ज मिले हैं।"[56] यह स्थिति 'कावेरी' उपन्यास के संदर्भ में ठीक जान पड़ती है।

इस तरह लेखिका ने प्रेम से वंचित नारी की समस्या को बखूबी से प्रस्तुत किया है।

4.2.10 चिंताग्रस्त नारी की समस्या :

आधुनिक काल में उत्तरोत्तर नारी समस्याओं में वृद्धि होती जा रही है। डॉ॰ शशि जेकव के मतानुसार - "आधुनिक युग में नारी के शिक्षित हो जाने एवं नारी पर आधुनिक शिक्षा का प्रभाव पड़ने से शिक्षित दंपति के व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास में अनेक अपराधों की अवतारणा हो रही है।"[57] इसी के कारण नारी समस्या उद्भूत होती जा रही है। वर्तमान समय में चिंताग्रस्त नारी एक समस्या वन गयी है।

कावेरी आजीवन अपने वच्चों की चिंता में लगी रही। किंतु उसके वच्चों को

कावेरी की चिंता कभी भी नहीं रही है। सुधि भी अपने घर-परिवार की चिंता में इस तरह व्यस्त रहती है कि उसे अपने सहेलियों से मिलने का दूर ही रहा, वह उनको खत लिखने तक के लिए समय नहीं निकाल पाती हैं। उर्मि भी अपने परिवार की चिंता में लगी रहती है। चैती को अपने परिवार के साथ-साथ कावेरी की भी चिंता है। इसीलिए चैती कावेरी से मिलने के लिए उसके घर पर आती है।

सुधि अपने घर-परिवार, बच्चों और पति की चिंता से ऊब चुकी है। सुधि अपने पति की चिंता में हमेशा लगी रहती है, जब कि उसके पति को सुधि की चिंता है ही नहीं। सुधि का पति रवि नौकरी के नाम पर न जाने क्या-क्या करता रहा है। फिर भी सुधि को उसकी फिक्र रहती है। कावेरी से आत्मीयता, स्नेह पाकर सुधि खुश होती है। लेकिन जब रवि का ध्यान आता है, तब वह कहती है - "जब उसे ही मेरी चिंता नहीं है तो मैं ही क्यों चिंता का पहाड़ बनाती चली जाऊँ? क्या करूँ? इस तरह के पहाड़ बनाने और उसके नीचे दबते रहने की मेरी आदत बन गयी है और आदत से मजबूर मुझे न जागते चैन मिलता है, न सोते।"[58]

अत: 'कावेरी' उपन्यास के नारी पात्रों में अपने घर-परिवार के प्रति चिंता है, जो नारी की प्रमुख समस्याओं में से एक है।

4.2.11 पति से पीड़ित नारी की समस्या :

दांपत्य जीवन मनुष्य जीवन का सुखद पड़ाव है। दांपत्य-जीवन में पति-पत्नी को समान अधिकार होना चाहिए। प्राय: ऐसा देखने को नहीं मिलता। पुरूष प्रधान भारतीय संस्कृति में पुरूष को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। आशारानी व्होरा के मतानुसार - "मनुष्य जाति का अब तक का सारा इतिहास पुरूष द्वारा पुरूष का विकास रहा है।"[59] अत: नारी पुरूष के द्वारा प्रताड़ित, पीड़ित होती रही है।

सुधि का पति-रवि सुधि से घर के सभी काम जोर-जबरदस्ती से करवाता है। उसे पत्नी की कोई फिक्र नहीं है। रवि सुधि से हमेशा झगड़ता रहता है। रवि कमाने के नाम पर न जाने क्या-क्या करता है। सुधि नौकरी कर के अपना परिवार चलाती है।

सुधि अपने बारे में उर्मि को लिखने के बाद उर्मि के पति की बात करती है। उर्मि का पति अजित छोटी-छोटी वातों पर उर्मि पर नाराज होकर उससे झगड़ता है। इसलिए सुधि उर्मि को लिखती है - "मेरी तरफ से उसको कह दो कि यदि मिजाज बिगाड़ना जिंदगी के लिए निहायत जरूरी है तो कुछ बड़ी-बड़ी बातों को लेकर बिगाड़े। यूँ छोटी-छोटी बातों पर क्या गरम-ठंड़ा होना।

'खाना परोसते वक्त तुमने चपाती अपनी प्लेट में पहले क्यों रक्खी ?'

'सब्जी कम क्यों बना दी ?'

'तुम्हारी वो वाली सहेली इतनी देर क्यों बैठे रही ?'

'बिना पूछे यह वाली साड़ी क्यों पहन ली ?'

'रिंकू के लिए चाबीवाला खिलौना क्यों लायी ?' "[60]

इस प्रकार रवि छोटी-छोटी बातों को लेकर अपनी पत्नी से झगड़ता रहता है।

कावेरी भी अपने पति से त्रस्त होकर घर छोड़कर चली आयी होगी, ऐसा सुधि मानती है। सुधि अपने पति से पीड़ित होकर कावेरी के पीड़ा को भी नापने की कोशिश करती है। इसीलिए सुधि कहती है कि - "मैं ही कब बता सकती हूँ कि रवि मेरे लिए है या नहीं ? मेरे लिए न जीकर वह अपने लिए जीता है। क्यों जिंदगी गुजारी जाये उस आदमी के साथ जो सिर्फ अपने लिए चक्की पीसता है? शायद कावेरी दी भी इसीलिए अपने उनके साथ निभा नहीं पायी होंगी।"[61]

इस तरह 'कावेरी' उपन्यास की नारी पति के दवारा पीड़ित है, शोषित है, जो एक समस्या वनी है।

4.2.12 यौन संबंधों की समस्या :

सदियों से पीड़ित नारी की प्रमुख समस्याओं में से एक समस्या यौन संवंधों की है। नारी के साथ यौन-संवंधों की समस्या कमोंवेश मात्रा मे जुड़ी रहती आयी है। कभी इसका रूप सौम्य होता है, तो कभी यह समस्या उग्र रूप धारण करती रही है। डॉ० मोहन सावंत के

मतानुसार " ... आज भी नारी दुर्घटना ग्रस्त हो रही है और उसे दुर्घटनाग्रस्त करनेवाला पुरूष ही है।"[62] इससे पता चलता है कि नारी का यौन-संवंधी शोषण विनाश की कगार पर है।

परित्यक्ता कावेरी के पास रात अंधेरे में नाता जोड़ने के लिए बहुत से लोग आते रहते है। दिन के उजाले में लोग कावेरी के साथ रिश्ता जोड़ने में डरते है। डॉक्टर साहब कावेरी के साथ प्रेम करते है, किंतु वह भी अन्य रीड़र्स की तरह ही अंधेरे में ही कावेरी से मिलने आते है। डॉक्टर साहब तथा अन्य रीड़र कहते है कि "मैं नहीं चाहता कि आपके पास आते वक्त पहचाना जाऊं तभी तो संध्या के छुटपुट...।"[63] कावेरी सोचती है कि अंधेरे में इन्हें डर क्यों नहीं लगता, कावेरी को उजाले में रहने की आदत पड़ गयी है।

कावेरी के साथ लोगों ने अन्याय, अत्याचार खूब किया है। कावेरी के साथ रिश्ता जोड़ने आनेवाले लोग जब कावेरी द्वारा दुत्कार दिये जाते है, तो वह कावेरी की बदनामी करते है। इस संदर्भ में कावेरी का कथन द्रष्टव्य है - "लोगों ने ही मेरे साथ कौन शतरंज की गोटियाँ नहीं चलीं। गोटियाँ बिठाते-बिठाते ही जिंदगी गुजर गई। कौन-से लोगों की बात सोचूं? उन लोगों की, जो रात के अंधेरे में रिश्ता गांठने आते हैं और दिन के उजाले में अफवाह फैलाने में मशगूल हो जाते हैं।"[64] इस प्रकार कावेरी को यौन-संबंधों की शिकार बनाने की कोशिश निरंतर चलती रहती है, पर कावेरी किसी का कुछ नहीं चलने देती।

अत: लेखिका ने कावेरी के माध्यम से यौन-संबंधों की शिकार बनती नारियों की समस्या को उठाया है।

4.2.13 विद्रोह एंव दबंग बनती नारी की समस्या :

नारी अपने जीवन में विविध कष्टों, संकटों आदि को सहती रहती है। वह जव तक सहती जाती है तव तक समाज शोषण करने से वांज नहीं आता, किंतु जव वही नारी विद्रोही या दवंग वन जाती है, तव समाज उसके सामने घिग्घीयाने लगता है। कावेरी भी ऐसी ही विद्रोही नारी है। डॉ० मोहन सावंत मानते है - "राज वुद्धिराजा के उपन्यासों की नायिकाएँ धैर्यवान, साहसी, तर्कसंगत परंपराओं की समर्थक, मौन विद्रोह करनेवाली जिजीविषा की साक्षात प्रतिमाएँ हैं।"[65]

कावेरी को लोगों से हमेशा अपमान, शोषण, बदनामी मिलती रही है। फलस्वरूप कावेरी विद्रोही एवं दबंग बन गयी है। कावेरी की मर्दानी गालियों से सुधि भी डरती है। कावेरी के बारे में सुधि कहती है कि - "कड़वा सच बोलना तो रामजी ने कावेरी दी के आँचल नें डाल दिया था। सच तो यह रहा कि उन जैसी दबंग महिला को कुछ कहना खतरे से खाली नहीं रहा।"[66] इस प्रकार कावेरी को समाज ने विद्रोही नारी बना दिया है।

चैती एक अज्ञान से पीड़ित नारी है, उसे उसका पति पीटता है। वह ढोर-डंगर चराती है। डटकर खाती है और चादर ताने सोती है। पति उसे पीटता भी है तो उसे कुछ होनेवाला नहीं। चैती बचपन में भी दबंग रही है। चैती सुधि को बताती है कि - "कई-कंई बरसों तक साथ-साथ हम रेत के घरौंदे बनाते रहे, जेठ की दुपहरी में कच्ची आमियाँ और खजूरें बीनते रहें, कुट्टी होने पर एक-दूसरे को नोचते रहे और अब्बा होने पर चूमते रहे और मजेदार बात यह है कि मास्टरनी जी से बड़े ठाठ से पिटते रहे। अपनराम का उसूल है कि जो काम करो ठाक से करो, पिटो तब भी ठाठ से और बिको तब भी ठाठ से, रोओ तब भी ठाठ से और गाओ तब भी ठाठ से।"[67] इस प्रकार चैती भी एक विद्रोही नारी है।

लेखिकाने कावेरी और चैती के माध्यम से नारी के विद्रोही और दबंग बनते जाने की समस्या को प्रस्तुत किया है।

4.2.14 घुटन एवं छटपटाहट की समस्या :

भारतीय नारी सदियों से समस्याग्रस्त रही है। उसमें घुटन एवं छटपटाहट देखने को मिलती है। यह वर्तमान नारी की समस्या है। राम आहुजा के मतानुसार - "भारतीय समाज में महिलाएँ इतने लंबे काल से अवमान, यातना और शोषण का शिकार रही हैं, जितने काल के हमारे पास सामाजिक संगठन और पारिवारिक जीवन के लिखित प्रमाण उपलब्ध है।"[68] इसी समकालीन समय में घुटन एवं छटपटाहट की समस्या नारी के साथ जुड़ गई।

कावेरी अपने अकेलेपन के साथ जी रही है। वह अकेलेपन के कारण घुटघुट कर जी रही है। वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए छटपटाती है, किंतु उसमें जीने के

लिए अभिशप्त है। कावेरी लिखती है - "मुझे कौन बाँध सका है, जो डॉक्टर साहब बाँध पाएँगे। वह तो मैं ही जान बूझ कर बंधने जा रही हूँ। उनकी आँखों की कोरों को पनीला नहीं देख सकी हूँ न।"[69] कावेरी अपनी घुटन एवं छटपटाहट से मुक्त होने के लिए डॉक्टर साहब के साथ जाती है, फिर वह उसी स्थिति में वापस लौट आती है।

सुधि भी कावेरी की तरह घुटन और छटपटाहट की जिंदगी व्यतीत करती रही है। वह मुक्त होना चाहती है। सुधि के शद्बों में - "एक ही तरह की जिंदगी जीते-जीते थक गई हूँ। घर और बाहर सब कुछ एक ही लीक पर चल रहा है। यह लकीर तोड़ने की हिम्मत मैं कर नहीं सकती।"[70] इस प्रकार सुधि घुटन की जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त बनी है।

अंत में कहने की आवश्यकता नहीं कि लेखिका ने उक्त उपन्यास में नारी की घुटन एवं छटपटाहट को प्रस्तुत कर समसामायिक जीवन के प्रति सजगता का प्रमाण दिया है।

इस प्रकार डॉ० राज बुद्धिराजा ने 'कावेरी' उपन्यास में नारी-जीवन की विविध समस्याओं का चित्रित किया है।

निष्कर्ष :

नारी विविध गुण संपन्न होने के साथ-साथ वह मनुष्य की सहचारिणी, जन्मदात्री, प्रतिपालिका है। उसके विभिन्न रूप होते हैं। जैसे कि - माता, बहन, पत्नी, प्रेमिका आदि। वह विभिन्न रूपों में पुरूष की शक्तिदायिनी बन कर उसके साथ विचरण करती है।

नारी की युगानुरूप स्थिति पर दृष्टिपात करने से ज्ञात हो जाता है कि नारी की दयनीय स्थिति उत्तर वैदिक काल से प्रारंभ हो चुकी थी, जो अब तक बिगड़ती ही जा रही है। यह स्थिति समकालीन समय में वैसी ही है। उसमें परिवर्तन एवं सुधार की संभावना कम प्रतीत होती है।

'कावेरी' उपन्यास में लेखिका ने परित्यक्ता नारी की समस्या, अकेलेपन की समस्या, प्रेम विवाह एवं पुनर्विवाह की समस्या, परनिर्भरता की समस्या आदि विविध नारी समस्याओं को मुखर वाणी प्रदान की है। यह समस्याएँ लेखिका के स्वानुभूति से प्रसूत हुई है, इसमें कोई संदेह नहीं। आम नारी की समस्या क्या-क्या होती है और आम नारी को किन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

संकटों से गुजरना पड़ता है, इसका गहरा अध्ययन डॉ० राज बुद्धिराजा ने किया है, इसका प्रमाण है उनके उक्त उपन्यास में चित्रित नारी समस्याएँ।

अंततः लेखिका डॉ० राज बुद्धिराजा ने 'कावेरी' उपन्यास में स्वानुभूति से प्रसूत यथार्थ की भूमि पर आम नारी की समस्याओं को चित्रित करने में सफलता पायी है।

संदर्भ सूची :

1. प्रधान संपा० रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, तीसरा खंड़, पृ० **250**
2. मूल संपा० श्यामसुंदरदास - हिंदी शद्बसागर, पंचम भाग, पृ० **2594**
3. डॉ० वल्लभदास तिवारी - हिंदी काव्य में नारी, पृ० **42**
4. वही, पृ० **43**
5. प्रेमचंद - संक्षिप्त कर्मभूमि, पृ० **222**
6. डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन - धर्म और समाज, पृ० **167**
7. डॉ० गोवर्धन सिंह - महादेवी का गद्यसाहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, पृ० **122**
8. डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी - वाणभट्ट की आत्मकथा, पृ० **154-155**
9. संपा० अद्वैत आश्रम - विवेकानंद साहित्य (दशम खण्ड़) पृ. **263**
10. महादेवी वर्मा - श्रृखंला की कड़ियाँ, पृ० **14**
11. डॉ० श्यामवाला गोयल - भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ० **342**
12. M› K० Gandhi – Women and Social Injustice, P० 25
13. महादेवी वर्मा - श्रृखंला की कड़ियाँ, पृ० **16**
14. डॉ० उषा पाण्डेय - मध्ययुगीन उपन्यासों में नारी-भावना, पृ० **171**
15. डॉ० जे० एम० देसाई - आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, पृ० **14**
16. डॉ० नीता रत्नेश - भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी, पृ० **110**

17. विजलीप्रभा प्रकाश - जैनेंद्र के उपन्यासों के नारी चरित्रों का मनौवैज्ञानिक धरातल, पृ० 105

18. डॉ० श्यामबाला गोयल - भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य में नारी भावना : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ० 343

19. वही, पृ० 68

20. महादेवी वर्मा - श्रृखंला की कड़ियाँ, पृ० 143

21. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा दिशा पृ० 4

22. डॉ० किरण बाला अरोडा - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास में नारी, पृ० 18

23. डॉ० रामजी उपाध्याय - प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, पृ० 86

24. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा - दिशा, पृ० 5

25. वही, पृ० 7

26. डॉ० राजरानी शर्मा - हिंदी उपन्यासों में रूढ़िमुक्त नारी, पृ० 29

27. अद्वैत आश्रम - विवेकानंद साहित्य - चतुर्थ खंड़, पृ० 267

28. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा-दिशा, पृ० 8

29. हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र विश्वकोश, पृ० 129

30. वही, पृ० 130

31. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा-दिशा, पृ० 123

32. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 25

33. वही, पृ० 65-66

34. डॉ० शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ० 19

35. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी, पृ० 35

36. वही, पृ० 35

37. S० Radhakrishnan – Religion and Society, P० 147.

38. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 88

39. वही, पृ० 89

40. डॉ० ज्ञान अस्थाना - हिंदी कथा साहित्य : समकालीन संदर्भ, पृ० 10

41. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 11

42. वही, पृ० 16

43. परिशिष्ट से उद्धृत

44. डॉ० किरण वाला अरोडा - साठोत्तरी हिंदी उपन्यास में नारी, पृ० 244

45. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 12

46. वही, पृ० 24

47. डॉ० रमेश देशमुख - आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवनमूल्य, पृ० 74

48. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 17

49. वही, पृ० 48

50. वही, पृ० 49

51. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा-दिशा, पृ० 108

52. डॉ० कीर्ति केसर - समकालीन कहानी के विविध संदर्भ, पृ० 39

53. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 81

54. डॉ० राजरानी शर्मा - हिंदी उपन्यासों में रूढ़ि मुक्त नारी, पृ० 51

55. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 65

56. प्रधान संपा० अरविंद गुप्ता - साक्षी भारत, अप्रैल 2008, पृ० 25

(डॉ० मोहन मंगेशराव सावंत - राज बुद्धिराजा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

57. डॉ० शशि जेकव - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता, पृ० 42

58. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 22

59. आशारानी व्होरा - भारतीय नारी : दशा-दिशा, पृ० 168

60. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 23

61. वही, पृ० 34

62. प्रधान संपा० अरविंद गुप्ता - साक्षी भारत, अप्रैल 2008, पृ० 25
(डॉ० मोहन मंगेशराव सावंत - राज बुद्धिराजा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

63. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 88

64. वही, पृ० 89

65. प्रधान संपा० अरविंद गुप्ता - साक्षी भारत, अप्रैल 2008, पृ० 23
(डॉ० मोहन मंगेशराव सावंत - राज बुद्धिराजा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

66. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 16 - 17

67. वही, पृ० 47-48

68. राम आहुजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ० 227

69. डॉ० राज बुद्धिराजा - कावेरी पृ० 90

70. वही, पृ० 91